पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय एक

पौलुस और उसका धर्मविज्ञान

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

तैयारी 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:25) 5

II. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (1:46) 5

A. यहूदी संस्कृति (2:48) 5

B. गैरयहूदी संस्कृति (9:03) 6

III. प्रेरितीय सेवकाई (13:42) 8

A. कार्यभार (14:22) 8

B. मिशन (19:11) 10

1. पहली यात्रा *(19:22)* *10*

2. दूसरी यात्रा *(20:40)* *10*

3. तीसरी यात्रा *(22:20)* *11*

4. चौथी यात्रा *(23:16)* *11*

C. रचनाएँ (25:32) 12

IV. मुख्य दृष्टिकोण (30:15) 13

A. सुधारवाद (31:05) 13

B. युगान्त-संबंधी (35:03) 14

1. शब्दावली *(36:28)* *14*

2. संरचना *(37:49)* *15*

3. आशय *(50:50)* *18*

V. उपसंहार (59:15) 20

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 21

उपयोग के प्रश्न 26

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें प्रेरितों के काम 9:1–21:17

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:25)

II. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (1:46)

यहूदी संस्कृति ने पौलुस पर अत्यधिक प्रभाव डाला। और दूसरी तरफ, गैरयहूदी, यूनानी-रोमी संस्कृति ने भी उस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

A. यहूदी संस्कृति (2:48)

मसीही बनने से पूर्व पौलुस अपनी यहूदी विरासत के बारे में अत्यधिक जागरूक था।

अपने परिवर्तन के बाद भी पौलुस अपनी उसी यहूदी संस्कृति का गहरा आभारी बना रहा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस पुराने नियम की पवित्रशास्त्र के अधिकार पर विश्वास करता था।

पौलुस ने इस यहूदी विश्वास को भी दृढ़ता से थामे रखा कि परमेश्वर एक दिन दाऊद के वंशज, मसीह को भेजेगा, जो इस्राएल के कष्टों का अन्त करेगा और परमेश्वर के राज्य का गैरयहूदियों के देशों में विस्तार करेगा।

B. गैरयहूदी संस्कृति (9:03)

पवित्र आत्मा ने पौलुस के धर्मविज्ञान को आकार देने के लिए गैरयहूदी संस्कृति के साथ उसके सम्पर्क का भी प्रयोग किया।

अपने जीवन के अन्य समयों में पौलुस गैरयहूदी संसार में रहा।

- प्रेरितों के काम 21:39
- प्रेरितों के काम 22:3
- प्रेरितों के काम 9:30
- प्रेरितों के काम 11:25

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस को पूर्ण रोमी नागरिकता प्राप्त थी।

पौलुस ने यह भी दिखाया कि उसे परिष्कृत गैरयहूदी साहित्य का भी ज्ञान था।

पौलुस की गैरयहूदी संस्कृति की जानकारी का प्रभाव पड़ा :

पौलुस को कलीसिया के बाहर गैरयहूदियों में सेवकाई करने के लिए तैयार किया।

पौलुस कलीसिया के भीतर गैरयहूदियों के लिए सेवकाई करने, और उनके लिए लड़ने के लिए भी तैयार था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस की बहुत सी पत्रियों का एक केन्द्रिय विषय था कि यीशु ने गैरयहूदियों के लिए उद्धार को द्वार को खोल दिया था इसलिए कोई भी गैरयहूदी जो मसीह में था वह पूर्णत: यहूदी माना जाता था और परमेश्वर की नजरों में व्यवस्था को मानने में सिद्ध था।

III. प्रेरितीय सेवकाई (13:42)

कलीसिया के लिए पौलुस की सेवा ने निरन्तर उसके धर्मविज्ञान के लिए सन्दर्भ बिन्दू उपलब्ध करवाया और उसके विश्वास पर गहरा प्रभाव डाला।

A. कार्यभार (14:22)

मसीह ने प्रेरितों को इसलिए नियुक्त किया था कि वे उसकी खातिर पूर्ण अधिकार के साथ कलीसिया से बात करें।

पौलुस ने प्रेरित बनने के लिए निर्धारित योग्यताओं को पूरा किया था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह के अधिकृत प्रेरितों को तीन मापदण्ड पूरे करने थे :

- प्रेरितों के काम 1:21, उसने संसार में मसीह की सेवकाई से दौरान सीधे मसीह से शिक्षा पाई हो।
- प्रेरितों के काम 1:22, वे मसीह के पुनरूत्थान के गवाह हों।
- प्रेरितों के काम 1:23-26 नये प्रेरितों को स्वयं प्रभु के द्वारा उस पद के लिए चुना गया हो।

पौलुस की योग्यताएं :

- गलातियों 1:11-18
- प्रेरितों के काम 9:1-6
- प्रेरितों के काम 9:15

गलातियों 2:7-8 : उन्होंने देखा कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिए सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया, वैसा ही खतनारहितों के लिए मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुआं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी गैरयहूदियों में प्रभावशाली कार्य करवाया।

नये नियम ने यह स्पष्ट किया कि पौलुस एक वैध प्रेरित था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. मिशन (19:11)

हम पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं और उसकी रोम की यात्रा को देखकर उसके द्वारा किए गए कार्य के प्रकार को समझ सकते हैं।

1. पहली यात्रा (19:22)

इसका आरम्भ तब हुआ जब परमेश्वर ने सीरियाई अन्ताकिया की कलीसिया को पौलुस और बरनबास को एक विशेष कार्य के लिए अलग करने की आज्ञा दी। वे कुप्रुस द्वीप, एशिया माइनर और पूर्व दिशा में दिरबे तक गए।

मसीह के प्रेरित के रूप में पौलुस की पहली यात्रा तुलनात्मक रूप में छोटी और आसान थी।

2. दूसरी यात्रा (20:40)

यह यात्रा उस समय शुरू हुई जब प्रेरितों और यरूशलेम की कलीसिया के अगुवों ने अन्ताकिया, सीरिया, किलकिया और गलातिया की कलीसियाओं को एक पत्र पहुँचाने के लिए पौलुस और बरनबास को चुना, जिस में लिखा था कि गैरयहूदी विश्वासियों को उद्धार पाने के लिए खतना करवाने या मूसा की व्यवस्था को मानने की आवश्यकता नहीं थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. तीसरी यात्रा (22:20)

इन यात्राओं में पौलुस सीरियाई अन्ताकिया से गलातिया और फ्रूगिया गया, और फिर उसने इफिसुस में एक फलवन्त सेवकाई को स्थापित किया। वह उन कलीसियाओं में गया जिन्हें उसने अपनी पिछली यात्रा में उस क्षेत्र में स्थापित किया था।

4. चौथी यात्रा (23:16)

कैसर से की गई पौलुस की अपील के कारण चौथी यात्रा की शुरूआत हुई, जो उसे रोम में ले गई।

यरूशलेम और रोम के बीच के क्षेत्र पर एक त्वरित नजर प्रकट करती है कि पौलुस बहुत से विविध स्थानों पर गया, पच्चीस से अधिक नगरों में हजारों लोगों से सम्पर्क किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस के धर्मविज्ञान ने उसे एक आरामदायक कुर्सी पर बैठने वाले धर्मविज्ञानी बनने की अनुमति नहीं दी। निश्चित रूप से, पौलुस उच्च शिक्षित था और अत्यधिक बुद्धिमान था। परन्तु उसका धर्मविज्ञान उसे बलिदान और सेवा के जीवन की ओर ले गया।

C. रचनाएँ (25:32)

जब पौलुस ने अपनी पत्रियाँ (तेरह पत्रियाँ) लिखीं, तो वह विशिष्ट समस्याओं को संबोधित करने के लिए थीं। क्योंकि पौलुस की पत्रियाँ अवसर के अनुरूप थीं और विशेष समस्याओं को संबोधित करने के लिए लिखी लिखी गई थीं, इसलिए कोई भी पत्री उसके सम्पूर्ण धर्मविज्ञान को एक क्रमबद्ध या प्रणालीबद्ध रूप में प्रस्तुत नहीं करती।

रोमियों की पत्री की एक करीबी जाँच प्रकट करती है कि पौलुस ने इस पुस्तक को यहूदी और गैरयहूदी विश्वासियों के बीच संबंधों को स्थिरता प्रदान करने के लिए लिखा था।

- रोमियों 1–3: यहूदी और गैरयहूदी दोनों पापी हैं, और किसी के पास दूसरे पर श्रेष्ठता का दावा करने का अधिकार नहीं है।

- रोमियों 4–8: परमेश्वर ने यहूदियों और गैरयहूदियों के लिए एक ही प्रकार से उद्धार उपलब्ध करवाया है।

- रोमियों 9–11: मानवीय इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना में यहूदियों और गैरयहूदियों की पूरक भूमिकाएं।

- रोमियों 12–16: व्यावहारिक मसीही जीवन के कई विषय जो यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच संघर्षों से निकटता से जुड़े थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारा यह विश्वास उचित है कि पौलुस के पास एक उचित रूप से निर्मित, धर्मविज्ञानी विश्वासों का तार्किक समूह था, या जिसे हम प्रणालीबद्ध धर्मविज्ञान कह सकते हैं। परन्तु पौलुस के धर्मविज्ञान की प्रणाली अलिखित रही, यद्यपि यह उसकी पत्रियों का आधार थी।

IV. मुख्य दृष्टिकोण (30:15)

A. सुधारवाद (31:05)

धर्मसुधार आन्दोलन से पूर्व की सदियों में, रोमी कैथोलिक कलीसिया ने सिखाया कि उद्धार के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और मानवीय योग्यता दोनों की आवश्यकता थी। इस शिक्षा के अनुसार, धर्मी ठहराया जाना एक लम्बी प्रक्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर विश्वासी को अनुग्रह प्रदान करता है, और यह अनुग्रह अच्छे कार्य करने के द्वारा विश्वासी को अधिक धर्मी बनाता है।

पौलुस ने आरम्भिक कलीसिया में इस व्यवस्थावाद का विरोध किया, और बल दिया कि धर्मी ठहराया जाना एक अद्वितीय घटना है जो व्यवस्था के कार्यों से अलग घटती है।

सोला फीडे (केवल विश्वास से) : विश्वासियों को केवल मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है, और विश्वास के साथ हमारे अच्छे कार्यों के द्वारा नहीं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रोटेस्टेन्ट मसीहियों का मानना है कि पौलुस ने अपने धर्मविज्ञान का विकास मुख्यत: इस विषय के आधार पर किया है कि उद्धार एक विश्वासी पर कैसे लागू किया जाता है। यह माना जाता था कि पौलुस के धर्मविज्ञान की संरचना *ओर्डो सेल्युटिस*, या उद्धार के क्रम के आधार पर की गई है।

परमेश्वर के छुटकारे के लम्बे इतिहास में भी पौलुस की अत्यधिक रूचि थी जिसका चरमोत्कर्ष मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान था, *हिस्टोरिया सेल्युटिस*, या उद्धार का इतिहास। कहते हैं

B. युगान्त-संबंधी (35:03)

पौलुस के धर्मविज्ञान पर युगान्त विज्ञान संबंधी दृष्टिकोण यह विचार है कि उद्धार के इतिहास पौलुस के धर्मविज्ञान में प्रमुख है।

1. शब्दावली (36:28)

"युगान्त विज्ञान" शब्द यूनानी शब्द ऐस्केटोस से आता है, जिसका अर्थ है "अंतिम" या "अंत।"

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पारम्परिक प्रणालीबद्ध धर्मविज्ञान में, "युगान्त विज्ञान" शब्द मुख्यत: मसीह के दूसरे आगमन की बाइबल की शिक्षा के बारे में बताता है। जब हम पौलुस की "युगान्त विज्ञान संबंधी" विधि की बात करते हैं, तो हमें इस शब्द का विस्तार करना है कि यह मसीह के दूसरे आगमन से अधिक के बारे में बताए।

2. संरचना (37:49)

a. उत्पत्ति

यहूदी धर्मविज्ञानी :

यह युग >> मसीह >> आने वाला युग

- पहला पाप और समस्या का वर्तमान युग (यह युग)
- भविष्य में आशीष का एक युग (आने वाला युग)
- कि मसीह का प्रकट होना इन दोनों युगों के बीच एक निर्णायक मोड़ होगा।

पौलुस इतिहास का यही दो-युग दृष्टिकोण रखता था :

- 2 कुरिन्थियों 4:4
- 1 कुरिन्थियों 1:20
- 1 तीमुथियुस 6:19
- इफिसियों 2:7
- इफिसियों 1:21

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. विकास

इस युग से आने वाले युग में प्रवेश एक युग से अगले में साधारण बदलाव नहीं था। इसकी बजाय, इसमें एक दोहराव का समय शामिल था जिसमें दोनों युगों का समय एक साथ चलता है।

c. विषय

"पहले से और अभी नहीं" - अन्त के समयों या अन्त के दिनों के कुछ पहलू मसीह में पहले से ही यथार्थ बन चुके थे, जबकि दूसरे पहलू अभी पूर्ण नहीं हुए हैं।

- पहले से ही

  पौलुस की रचनाओं में यह तीन रूपों में प्रकट होता है :

  - पहला, परमेश्वर के राज्य का अन्तिम चरण उस समय शुरू हुआ जब यीशु अपने स्वर्गीय सिंहासन पर बैठ गया।

  - दूसरा, आने वाले युग का पहलू जो पहले से ही हमारे साथ उपस्थित है वह पवित्र आत्मा में हमारी अनन्त मीरास का स्वाद है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- अन्ततः, पौलुस ने इस तथ्य का भी संकेत दिया कि मसीह ने आने वाले युग से संबंधित नई सृष्टि का आरम्भ कर दिया था।

- अभी नहीं

पौलुस का यह विश्वास था कि अन्त के दिनों की आशीषें अभी अपनी पूर्णता में नहीं आई थीं। वह मसीह के लौटने के समय को ऐसे समय के रूप में देखता है जब मसीह अन्तिम न्याय और आशीषों को पूर्ण करेगा।

तीन रूपों में पौलुस का दृष्टिकोण दिखाई देता है :

- पहला, पौलुस ने सिखाया कि मसीह, राजा अब स्वर्ग में अपने सिंहासन से राज्य कर रहा है। परन्तु पौलुस यह विश्वास भी करता था कि जब मसीह लौटेगा तो वह परमेश्वर के राज्य की पूर्णता को लाएगा।

- दूसरा, पौलुस का विश्वास था कि पवित्र आत्मा उद्धार की फसल का पहला फल, और हमारी मीरास का बयाना है। परन्तु "पहला फल" और "बयाना" शब्द संकेत देते हैं कि हमारी मीरास की पूर्ण प्राप्ति भविष्य में है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- अन्तत:, यद्यपि नई सृष्टि विश्वासियों के जीवन में एक आत्मिक यथार्थ बन चुकी है, लेकिन हम सृष्टि के पूरी तरह नये हो जाने और नई पृथ्वी पर हमारे अनन्त राज्य की भी बाट जोहते हैं।

3. आशय (50:50)

पौलुस ने अपने धर्मविज्ञान को मोटे तौर पर पासबान की सेवकाई के सन्दर्भ में अभिव्यक्त किया। पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर ने अपने पहले आगमन में विश्वासियों के लिए क्या किया था, और मसीहियों को सिखाया कि उन्हें अपना जीवन कैसे बिताना चाहिए जब वे मसीह के आगमन की प्रतीक्षा में हैं।

a. मसीह के साथ एकता

रोमियों 6:3-4 : मसीह के साथ हमारी एकता वास्तव में हमें इस युग से अगले युग में ले जाती है।

रोमियों 6:10-11 : मसीह के साथ हमारी एकता के बारे में पौलुस की शिक्षा ने युगान्त विज्ञान को सारे विश्वासियों की व्यवहारिक जीवनों में लागू किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. दिव्य उद्देश्य

युगों के दोहराव के लिए परमेश्वर की योजना में विश्वास करने वाले यहूदियों और गैरयहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में एक बनाना शामिल है।

कलीसिया आत्मिक परिपक्वता की पूर्णता तक पहुँच सके।

इफिसियों 2:19-22

इफिसियों 4:15-16

रोमियों 11:25

इफिसियों 3:4-6

c. मसीही आशा

पौलुस का युगान्त विज्ञान यह संकेत देने के द्वारा हमें भविष्य के लिए आशा देता है कि हमने आने वाले युग के बहुत से लाभों का पहले से ही आनन्द लेना शुरू कर दिया है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

वे आशीषें जो अब भी हमारे सामने हैं वे इतनी अद्‌भुत हैं कि वे इस जीवन में हमारे द्वारा सही जाने वाली सारी परीक्षाओं को पूरी तरह ढाँप लेती हैं।

V. उपसंहार (59:15)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस की यहूदी संस्कृति ने उसे और उसके धर्मविज्ञान को प्रभावित किया।

2. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस की गैरयहूदी संस्कृति ने उसे और उसके धर्मविज्ञान को प्रभावित किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. पौलुस के धर्मविज्ञान को समझने के लिए पौलुस की यहूदी और गैरयहूदी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखना क्यों महत्वपूर्ण है?

4. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस के प्रेरितीय कार्य ने उसे अधिकार और वैधता प्रदान की।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. पौलुस की प्रत्येक मिशनरी यात्रा और रोम की ओर उसकी यात्रा में कौनसी मुख्य घटनाएं घटीं?

6. पौलुस की रचनाओं का मुख्य उद्देश्य क्या था?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. किस प्रकार पौलुस की प्रेरितीय सेवकाई के विभिन्न पहलू एक दूसरे की बढ़ोतरी करते हैं?

8. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार सुधारवाद और जिन विवादों का पौलुस ने सामना किया एक दूसरे के समानांतर हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. पौलुस के युगान्त-विज्ञान का वर्णन कीजिए।

10. सुधारवाद के समय के और आधुनिक संसार में रहने वाले मसीहियों के लिए पौलुस के युगान्त-विज्ञान के क्या आशय थे?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. पौलुस की पृष्ठभूमि और सेवकाई के प्रकाश में जब हम उसकी रचनाओं को पढ़ते हैं तो हमें कौनसे प्रश्न मन में रखने चाहिए?

2. मसीह के अनुयायी होने के नाते "पहले ही" में रहना आपको क्यों प्रोत्साहित करता है?

3. मसीह के अनुयायी होने के नाते "अभी नहीं" में रहना क्यों आपके लिए प्रोत्साहन और उद्देश्य को लाता है?

4. किस प्रकार पौलुस के धर्मविज्ञान की सही समझ मसीह की सेवा करने के लिए विवश और प्रेरित करती है?

5. किस प्रकार "पहले ही-पर अभी नहीं" आयाम की समझ इस संसार में कष्टों को समझने में आपकी सहायता करती है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org